Volume : 1 | Issue : 4 | Sep 2012 • ISSN No 2277 - 8160

Research Paper | Mass Communication

साहित्य, संस्कृति और मीडिया
Sahitya, Sanskrut aur Media

Dr Subodh Kumar

Assistant Professor & Co-ordinator, Department of Journalism & Mass Communication, Uttarakhand Open University, Haldwani (Nainital)

ABSTRACT

साहित्य और संस्कृति हिंदी पत्रकारिता की मूल आत्मा रही है। इस कारण पत्रकारिता की शुरुआत के साथ ही जहां हमारे यहां सामाजिक जागरूकता और अंगरेजों के विरोध की भावना देखी गई, वहीं स्वतंत्रता के बाद इसने मोहभंग को रेखांकित किया। चाहे वह हिंदी को राजभाषा बनाने का मामला हो या अंगरेजी का विरोध, हिंदी पत्रकारिता ने लगातार सरकारी नीतियों पर सवाल खड़े किए। उस दौरान सांस्कृतिक पत्रकारिता का भी उभार देखा गया। आज की हिंदी पत्रकारिता में न तो साहित्य का उतना दखल है और न ही संस्कृति का। बल्कि ग्लोबलाइजेशन ने हिंदी पत्रकारिता के सामने एक नई किस्म की चुनौती खड़ी कर दी है। प्रस्तुत शोध पत्र में इस बात को रेखांकित किया गया है कि किस तरह से मीडिया ने साहित्य और संस्कृति को एक फलक पर समेटा है।

KEYWORDS: हिंदी पत्रकारिता, साहित्यिक, सांस्कृतिक।

1.1 प्रस्तावना

साहित्य और संस्कृति की तुलना में मीडिया नया है, लेकिन इनका आपसी संबंध काफी महत्वपूर्ण भी है। साहित्य से 'सहित' यानी साथ होने का भाव है। अर्थात जो मनुष्य के साथ रहे वह साहित्य है। साहित्य की परिभाषा बहुत व्यापक है। दूसरी ओर संस्कृति शब्द संस्कार से बना है। संस्कार का अर्थ है व्यक्ति के मानस पर पड़ने वाला वह प्रभाव जो उसके परिवेश, परिवार और समाज के माध्यम से पड़ता है। हिंदी पत्रकारिता की मूल आत्मा साहित्यिकता-सांस्कृतिकता ही है। हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता जैसी विविधता अन्यत्र नहीं है। हिंदी पत्रकारिता की शुरुआत में ज्यादातर अखबारों-पत्रिकाओं के संपादक साहित्यिक रुचि के ही होते थे। हिंदी में 'पत्रकार' शब्द माखनलाल चतुर्वेदी द्वारा दिया गया था। इसी तरह 'राष्ट्रपति', 'सर्वश्री', 'मुद्रास्फीति' 'धन्यवाद' जैसे शब्द बाबूराम विष्णु पराड़कर ने दिए। बेशक आज आज हिंदी पत्रकारिता पर साहित्य का उतना प्रभाव नहीं है, लेकिन साहित्य और संस्कृति से काटकर पत्रकारिता की कल्पना नहीं की जा सकती। संस्कृति के मुद्दे को उठाने वाली पत्रकारिता सांस्कृतिक पत्रकारिता है। नाटक, संगीत, चित्रकला के बारे में लिखना भी सांस्कृतिक पत्रकारिता है और किसी भाषा, लिपि या समुदाय के हाशिये पर चले जाने को रेखांकित करना भी।

1.2 साहित्यिक-सांस्कृतिक पत्रकारिता :

हिंदी पत्रकारिता ने साहित्य और संस्कृति से जितना ग्रहण किया, उतना शायद ही दुनिया की और किसी भाषा की पत्रकारिता में संभव हुआ होगा। हिंदी के पहले पत्र 'उदन्त मार्तण्ड' के प्रकाशन का निहित लक्ष्य हिंदी भाषी जनता में जागरण का संदेश देना था। इसी दौर में 'बंगदूत', 'बनारस अखबार', 'मालवा अखबार', 'सुधाकर', 'समाचार सुधावर्षण', 'अल्मोड़ा अखबार', 'सार सुधानिधि', 'भारत मित्र', 'उचित वक्ता' आदि अखबारों ने साहित्यिक पत्रकारिता को शुरुआती आधार दिया। इसके बाद 'कवि वचन सुधा' के साथ भारतेंदु युग की शुरुआत हुई। स्वाधीनता की मांग इस दौर की पत्रकारिता का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य थी। 'काशी', 'बिहार बन्धु' 'हिन्दी प्रदीप', 'आर्यमित्र', 'सार सुधानिधि', 'ब्राह्मण', 'हिन्दोस्थान' आदि इस युग के उल्लेखनीय पत्र थे। मालवीय युग में हिंदी की पत्रकारिता का अनेक स्तरों पर विकास हुआ। राष्ट्रीय चेतना, जागरण, देशप्रेम, समाज सुधार की भावना के साथ-साथ राजनीतिक प्रश्नाकुलता भी बढ़ी। इस युग में पंडित अंबिकाप्रसाद वाजपेयी ने 'नृसिंह' और बाबूराव विष्णु पराड़कर ने 'हितवार्ता' के माध्यम से पत्रकारिता को राजनीतिक विश्लेषणों से जोड़ने की पहल की। 'आर्यावर्त', 'हिन्दी बंगवासी', 'वेंकटेष्वर समाचार', 'नागरी प्रचारिणी पत्रिका', 'सरस्वती' आदि इस दौर के महत्वपूर्ण पत्र-पत्रिकाएं थीं। द्विवेदी युग में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' के माध्यम से पत्रकारिता को सांस्कृतिक अनुष्ठान में बदल दिया। आचार्य द्विवेदी ने नए-नए लेखकों की एक पूरी पीढ़ी तैयार की। गांधी युग में कांग्रेस की रीति-नीति पत्रकारिता का ध्येय बनी, क्योंकि तब अंगरेजों की गुलामी से देश को मुक्त कराने का बड़ा लक्ष्य सामने था। गांधी जी के आविर्भाव ने पत्रकारिता को एक बड़े मिशन में बदल दिया।

1.3 वैष्विक साहित्यिक-सांस्कृतिक पत्रकारिता :

कागज और मुद्रण का आविष्कार सबसे पहले चीन में हुआ। पेकिंग गजट या तिंचाओ नाम का पहला समाचार पत्र भी चीन से ही निकला। चीन से मुद्रण कला यूरोप पहुंची। साहित्यिक-सांस्कृतिक पत्रकारिता की शुरुआत अखबारों की शुरुआत के साथ ही हुई। यह याद रखना चाहिए कि आधुनिक विश्व में तमाम जनक्रांतियों में पत्रकारिता का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। चाहे अमेरिका की स्वतंत्रता की लड़ाई रही हो या भारत का स्वतंत्रता संग्राम या अफ्रीका में जातीय अस्मिता का संघर्ष-इन सबको वाणी पत्रकारिता ने ही दी। भारतीय समाज पर ग्लोबलाइजेशन का प्रभाव वैश्विक परिदृश्य समाज और पत्रकारिता को किस तरह प्रभावित करता है, इसका पता ग्लोबलाइजेशन के बाद भारतीय समाज में आए बदलाव से चलता है। ग्लोबलाइजेशन से हमारे समाज में सकारात्मक बदलाव भी कुछ कम नहीं हुआ।

1.4 भारतीय साहित्यिक-सांस्कृतिक पत्रकारिता- हिंदी पत्रकारिता का आधार

हिंदी पत्रकारिता का उद्भव 30 मई 1826 को कोलकाता में युगल किशोर शुक्ल के 'उदन्त मार्तण्ड' के प्रकाशन के साथ हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी में ही बंगाल को छोड़कर पूरे देश में नवजागरण हुआ, इसलिए उस दौर के समाचारपत्रों में नवजागरण का संदेश मिलता है। उस समय एक ओर पत्रकारिता में जहां विचार-स्वातंत्र्य की बीच पड़ी, वहीं आधुनिक शिक्षा-व्यवस्था की शुरुआत से जनजागृति आई। इसी युग में भाषा के स्तर पर हिंदी अधिक से अधिक रचनात्मक और संप्रेषणीय हो पाई। हिंदी ने अपने विभिन्न स्थानीय स्रोतों से शब्द लेकर खुद को समृद्ध करना शुरू किया। भोजपुरी, अवधी, बुंदेली, ब्रज, रा. जस्थानी, मारवाड़ी, मालवी, मैथिली, मगही, कौरवी जैसी उपभाषाओं के शब्दों-मुहावरों से हिंदी भाषा और इसकी पत्रकारिता का विकास हुआ। इस दौर में साहित्य की जनपक्षधरता लौटी, तो सांस्कृतिक स्तर पर जनता की अभिव्यक्ति भी संभव हुई। इस पूरे दौर में जिन महानुभावों ने साहित्यिक सांस्कृतिक पत्रकारिता को नई दिशा दी, उनमें भारतेंदु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, महात्मा गांधी, माखनलाल चतुर्वेदी, प्रेमचंद, गणेशशंकर विद्यार्थी, बाबूराव विष्णु पराड़कर आदि प्रमुख थे।

1.5 स्वातंत्र्योत्तर भारतीय पत्रकारिता

हिंदी पत्रकारिता ने स्वतंत्रता संग्राम के समय जो सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक सवाल उठाए थे, उन्हें ही अपनी परंपरा और चिंतन का केंद्र बनाया। हिंदी में 'भारत', 'अमृत पत्रिका', 'आज', 'अभ्युदय', 'चेतना', 'हिंदुस्तान' 'जागरण' 'अमर उजाला', 'भास्कर', 'नवजीवन', 'नवभारत टाइम्स', 'लोकसत्ता', 'जनसत्ता' जैसे महत्वपूर्ण दैनिक निकलने लगे। अज्ञेय के नेतृत्व में दिनमान और डॉ. धर्मवीर भारती के दिशा-निर्देश में धर्मयुग जैसे समाचार-संस्कृति के साप्ताहिकों ने नया इतिहास रच दिया। इसी तरह मनोहरश्याम जोशी और हिमांशु जोशी ने साप्ताहिक हिंदुस्तान, प्रेमचंद के दोनों बेटों श्रीपत. राय और अमृतराय ने क्रमशः कहानी और हंस, हैदराबाद से बद्री विशाल पित्ती के नेतृत्व में कल्पना, कोलकाता से भारतीय ज्ञानपीठ के लक्ष्मीचंद जैन-शरद देवड़ा ने ज्ञानोदय और पटना से उदयराज सिंह-रामवृक्ष बेनीपुरी ने नई धारा का प्रकाशन शुरू किया। नई कहानियां, सारिका, सर्वोत्तम, कादंबिनी, नवयुग, हिंदी ब्लिट्ज जैसे पत्रकारिता के नए प्रतिमान आए। इंडिया टुडे और आउटलुक जैसी पत्रिकाओं ने बाद के दौर में कंटेंट और तकनीक, दोनों के लिहाज से पत्रकारिता की धारा बदली। लघु पत्रिकाओं का तो जैसे आंदोलन ही चल पड़ा। वैचारिक और परिवर्तनकामी इन पत्रिकाओं में पहल, आलोचना, समकाल, लीन तीसरी दुनिया, उद्भावना, वर्तमान साहित्य, हंस, कथादेश, नया ज्ञानोदय, शेष, तद्भव, वागर्थ जैसी पत्रिकाओं में से ज्यादातर चल रही हैं। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी पत्रकारिता साहित्य में 'कल्पना' जैसी साहित्यिक पत्रिका आई, जिसका उद्देश्य पत्रिका की संख्या बढ़ाना या ग्राहकों का मनोरंजन करना नहीं, बल्कि हिंदी के स्तर को उन्नत करना था। 'प्रतीक' ने परंपराओं के तिरस्कार और खंडन को नकारा, तो 'आलोचना' ने साहित्यिक प्रयोगों की आलोचना की। रघुवीर सहाय ने कल्पना में फिल्मों की समीक्षाएं लिखीं, तो अज्ञेय और श्रीकांत वर्मा जैसे लेखकों ने कलाओं पर लिखा। इस दौर में धर्मयुग और दिनमान ने साहित्यिक-सांस्कृतिक मोर्चे पर सबसे अधिक सक्रियता दिखाई। इस दौर में पूरी तरह नाटकों पर केंद्रित 'नटरंग' जैसी पत्रिका शुरू हुई, तो सिनेमा, नाटक, कला, नृत्य-संगीत पर 'पूर्वाग्रह' जैसी पत्रिका निकलने लगी। 'देशबंधु' जैसे अखबार ने फिल्म समीक्षा को समाज से जोड़ा, तो 'नई दुनिया' ने सांस्कृतिक गंभीरता बनाए रखकर साहित्य और अन्य कलाओं की मीमांसा पर बल दिया, जबकि 'रविवार' ने हिंदी सिनेमा पर बहस को संभव बनाया।

1.6 साहित्यिक पत्रकारिता के रूप

कहानी : कहानी का मौजूदा स्वरूप पश्चिम में विकसित हुआ है, जहां एडगर एलन पो, मोपासां और चेखव आदि ने इसे आधुनिक रूप दिया। आधुनिक काल में यहां इसकी शुरुआत के साथ ही इसे हाथोंहाथ लिया गया। प्रेमचंद, जैनेंद्र कुमार, अज्ञेय, मोहन राकेश, कमलेश्वर, शैलेश मटियानी, विद्यासागर नौटियाल, संजीव, उदय प्रकाश तक कथाकारों की कई पीढ़ियां यहां हो चुकी हैं। कहानी एक ऐसी साहित्यिक विधा है, जिसे मीडिया भी महत्व देता है।

कविता : साहित्य की किसी एक विधा ने अगर पत्रकारिता को सर्वाधिक प्रभावित किया है, तो वह कविता है। दुनिया की हर भाषा में अभिव्यक्ति का पहला माध्यम कविता ही है, गद्य बाद की खोज है। रवींद्रनाथ ठाकुर ने कविता में आधुनिक नजरिये की शुरुआत की। आधुनिक हिंदी कविता की शुरुआत निराला से होती है, जो अज्ञेय, मुक्तिबोध, नागार्जुन और शमशेर में अपनी पूर्णता को प्राप्त करती है।

संस्मरण : संस्मरण का अर्थ संपूर्ण स्मृति। एक साथ जीने और बीतने में मिला भाव संस्मरण लिखने की भावभूमि होता है। संस्मरण में रचनाकार खुद को भी प्रकाशित करता चलता है। उपेंद्रनाथ अश्क ने मंटो मेरा दुश्मन जैसी एक कालजयी किताब लिखी है, जिसमें संस्मरणों के जरिये मंटो को बेहतर जाना जा सकता है। संस्मरण को हिंदी की केंद्रीय विधा बनाने में महादेवी वर्मा, कान्तिकुमारजैन और काशीनाथ सिंह जैसों का

योगदान औरों से ज्यादा है।

डायरी : डायरी एक तरल विधा है। यह बहुत व्यक्तिगत होती है। डायरी में चूंकि निजता होती है, इसलिए उसकी भाषा अंतर्मुखी होती है। डायरी मूलतः पश्चिम की विधा है। विलियम वड्सवर्थ की बहन डोरोथी वड्सवर्थ, वर्जीनिया वुल्फ, एन फ्रेंक (द डायरी ऑफ ए यंग गर्ल), दोस्तोवस्की, फ्रांज काफ्का ने डायरी विधा को नई पहचान दी। हिंदी में अज्ञेय, शमशेर और मलयज की डायरियां काफी प्रसिद्ध हैं। मुक्तिबोध ने एक साहित्यिक की डायरी जैसी किताब लिखी। अनीता राकेश ने अपने पति मोहन राकेश पर चंद सतरें जैसी डायरी लिखी। जाबिर हुसैन ने डायरी विधा में अभिनव प्रयोग किया है। बीते वर्शों में डॉ. नरेंद्र मोहन की साथ-साथ मेरा साया, पुष्पराज की नंदीग्राम डायरी, सुधीर विद्यार्थी की लौटना कठिन है और दामोदर दत्त दीक्षित की अटलांटिक-प्रशांत के बीच जैसी कुछ डायरियां आई हैं।

1.7 साहित्यिक-सांस्कृतिक पत्रकारिता

मूर्तिकला, चित्रकला, संगीत कला, नाटक और फिल्में भी सांस्कृतिक पत्रकारिता के रूप हैं। ये सभी कला रूप हमारे समाज को प्रभावित करते हैं। मूर्तिकला या चित्रकला का जो स्वरूप कुछ दशक पहले तक था, वह आज नहीं है। नाटकों में पारसी रंगमंच के वर्चस्व के पुराने दौर से आज हम बहुत आगे निकल गए हैं। जो संगीत कला कभी राजघरानों के संरक्षण का मोहताज थी, वह आज व्यावसायिक दोहन के चरम पर पहुंच गया है। समसामयिक राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को बहुत प्रभावित करती है। भारतेंदुयुगीन पत्रकारिता ने सामाजिक मजबूती और स्त्री सशक्तीकरण के पक्ष में माहौल बनाया, तो गणेश शंकर विद्यार्थी के दौर की पत्रकारिता ने जनमत को क्रांति का समर्थक बनाया, तो प्रेमचंद की पत्रकारिता ने लोगों में देशभक्ति और गुलामी के विरोध को स्वर दिया। आज न तो सामाजिक मूल्यों की किसी को परवाह है, न पत्रकारीय मूल्यों की।

1.8 निश्कर्श : लोकतंत्र, सामाजिक आंदोलन और मीडिया

भारत जैसे लोकतांत्रिक देश में आजादी के बाद सामाजिक आंदोलन हालांकि कम ही हुए हैं। लेकिन जितने भी आंदोलन हुए, मीडिया ने उन सबको समुचित महत्व दिया। हालांकि मीडिया की यह व्यापकता पहले इतनी नहीं थी। आपातकाल के विरोध में जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में खड़ा हुआ आंदोलन आजाद भारत में सबसे बड़ा जनांदोलन था। लेकिन आपातकाल में मीडिया पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। टेलीविजन चैनल तब नहीं आए थे। इसलिए सरकारी दमन से जुड़ी खबरों की सत्यता पर यकीन करने के लिए तब बीबीसी का सहारा लेना पड़ता था। नई अर्थनीति के आने से पहले पूंजी का इतना विस्तार नहीं हुआ था और न ही मीडिया इतना ताकतवर और सुदूर प्रसारी था। इसीलिए उस दौर के सामाजिक आंदोलन भी मीडिया में उतनी जगह नहीं बना पाए थे। उत्तराखंड में वनों की कटाई के खिलाफ पैदा 'चिपको आंदोलन' ने तब मीडिया से ज्यादा जनमानस में जगह बनाई थी, तो इसकी वजह यही है। लेकिन उसी उत्तराखंड में डेढ़ दशक पहले शराब भट्ठियों के खिलाफ महिलाओं के आंदोलन ने मीडिया में अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज की। अलबत्ता मीडिया की इस अति सक्रियता के अपने खतरे भी हैं। अन्ना आंदोलन इसका ताजा उदाहरण है। आंदोलन शुरू होते ही मीडिया खासकर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने इसे हाइजैक कर लिया। उसने यह देखने की भी जहमत नहीं उठाई कि अन्ना आंदोलन के अपने अंतर्विरोध कम नहीं हैं। हालांकि तब भी प्रिंट मीडिया के एक बड़े हिस्से ने अपेक्षाकृत संयम बरता। इस दौर में मीडिया पहले की अपेक्षा कहीं ताकतवर है। उसके पास संसाधन भी है और उसकी पहुंच भी बहुत व्यापक है। लेकिन इसके साथ-साथ उसकी चुनौतियां भी बढ़ गई हैं।

संदर्भ ग्रंथ :

REFERENCES

1. जोशी ज्योतिष- साहित्यिक पत्रकारिता, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली। 2. श्रीधर विजयदत्त-पहला संपादकीय, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली। 3. जोशी पूरनचंद्र-परिवर्तन और विकास के सांस्कृतिक आयाम, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।